महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

कक्षा- एम.ए./एम.फिल./पीएच्.डी.

विषय- काव्यप्रकाश

Code – SNKT2003

उपविषय- शाब्दी-व्यञ्जना

प्रो. प्रसून दत्त सिंह
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

शाब्दी व्यञ्जना

शाब्दी व्यञ्जना में शब्दों का प्राधान्य एवं महत्त्व होता है। शब्द के परिवर्तन के साथ ही अर्थ भी परिवर्तित हो जाता है। अनेकार्थक शब्दों का अर्थ निश्चित होने पर ही शाब्दी व्यञ्जना अपना कार्य करती है। "जब अभिधा शक्ति द्वारा संयोगादि अनेकार्थक शब्दों के एक अर्थ का निर्णय हो जाने पर, जिसके द्वारा अन्य अर्थ का ज्ञान होता है, उसे अभिधामूला व्यञ्जना कहते हैं"

अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते।
संयोगाद्यैरवाच्यर्थधीकृद् व्याप्तिरञ्जन॥

(का० प्र० 2/19)

आशय यह है कि "जिन शब्दों से एक से अधिक अर्थ निकले उन्हें अनेकार्थक शब्द कहते है। अभिधामूला शाब्दी व्यञ्जना में संयोग आदि के द्वारा अनेक अर्थ वाले शब्दों का एक विशेष अर्थ निश्चित किया जाता है। इस प्रकार विशेष अर्थ के नियन्त्रित कर देने से अनेकार्थक शब्दों के अन्य अर्थ अवाच्य हो जाते हैं। अर्थात् वे अर्थ अभिधा शक्ति से प्रकट न होने के कारण वाच्यार्थ नहीं होते। इस प्रकार अनेकार्थवाची शब्दों के वाच्यार्थ से भिन्न जो अन्य अर्थ का बोध होता है, उसे अभिधामूला व्यञ्जना कहते हैं। अभिधा पर आश्रित होने के कारण इसे अभिधामूला व्यञ्जना कहा जाता है। अभिधाशयित के संयोगादि के द्वारा एक अर्थ का बोध कराकर रुक जाने के बाद व्यञ्जना के द्वारा एक विशेष अर्थ का बोध होता है।"

(भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, पृ० 104)

अनेकार्थक शब्दों के नियन्त्रण के सम्बन्ध में भर्तृहरि के 'वाक्यपदीय' के ये दो श्लोक द्रष्टव्य हैं जिनमें अनेकार्थक शब्दों के नियन्त्रण के चौदह आधारों का उल्लेख किया गया है-

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता,
सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः ।
शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः ॥

अर्थात् संयोग, विप्रयोग, साहचर्य, विरोध, अर्थ, प्रकरण, लिङ्ग, अन्य शब्द की सन्निधि, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यक्ति और स्वर आदि शब्द के अर्थ का निर्णय न होने पर विशिष्ट अर्थ के निर्णय में सहयोगी कारण होते हैं।

संयोग -

अनेकार्थक शब्द के किसी एक ही अर्थ के साथ प्रसिद्ध सम्बन्ध को संयोग कहते हैं। हरि शब्द के अनेक अर्थ हैं। परन्तु उसके साथ जब शंख, चक्र के संयोग का वर्णन हो तो 'हरि' शब्द का अर्थ विष्णु ही प्रसिद्ध है। जैसे - "सशंख चक्रोहरिः" इसका अर्थ शंख-चक्रधारी विष्णु ही है।

विप्रयोग –

"अशंखचक्रोहरि" कहने पर भी 'हरि' शब्द के वियोग के कारण विष्णु का ही सूचक है। क्योंकि वियोग या असंयोग की बात वहीं हो सकती है, जहाँ पहले उसका अस्तित्व हो।

साहचर्य –

साथ रहने का नाम 'साहचर्य' है। 'राम' शब्द अनेकार्थक है।' किन्तु साहचर्य के कारण यह शब्द विशिष्ट अर्थ का बोधक है। जैसे - 'राम-लक्ष्मणौ' में राम शब्द लक्ष्मण के साहचर्य के कारण दशरथ पुत्र 'राम' का बोधक है और जब 'रामर्जुनौ' का प्रयोग हो तो यही राम 'परशुराम' तथा कार्तवीर्य अर्जुन के विरोध के कारण राम-परशुराम का बोधक है।

अर्थ

अर्थ से आशय यह है कि जो अर्थ दूसरे प्रकार से सम्भव न हो अथवा शब्द के अर्थ के कारण अनेकार्थक शब्द के ही अर्थ का संकेत देता हो, जैसे - "स्थाणुं भज भवच्छिदे।" अर्थात् संसार के दुःख के नाश के लिए स्थाणु का भजन करो।' स्थाणु शब्द अनेकार्थक है। कोश के अनुसार - "स्थाणुर्ना ध्रुवः शंकुः स्थाणु रुद्र उमापतिः। " किन्तु जब संसार के दुःखनाश के लिए 'स्थाणु' का स्मरण हो तो 'स्थाणु' का अर्थ शिव है, ठूठ नहीं क्योंकि ठंठ में संसार से पार लगाने की क्षमता नहीं है।

प्रकरण –

जहाँ प्रसङ्ग के अनुसार अनेकार्थक शब्द का एक ही अर्थ निकले, वहाँ 'प्रकरण होता है, जैसे '**सर्वं जानाति देव**' यहाँ देव शब्द 'आप' के अर्थ में नियन्त्रित है, अन्यथा देव शब्द के कई अर्थ सम्भव हैं।

लिङ्ग -

जब कोई विशेष चिह्न देखकर अनेकार्थवादी शब्द के एक अर्थ का निर्णय हो, जसे - कुपितो मकरध्वज 'इति कामे'। 'मकरध्वज' शब्द के अर्थ हैं समुद्र, चन्द्रमा और कामदेव। किन्तु कूपित चिह्न कामदेव का है, अतः यहाँ कोपरोष चिह्न से यह शब्द नियन्त्रित है।

अन्य सन्निधि –

जब किसी अन्य अर्थ के सामीप्य के कारण विशेष अर्थ का बोध हो, जैसे - "देवस्य पुरारातेः।" देव शब्द अनेकार्थक है, जिसके राजा, देवता आदि अनेक अर्थ हो सकते हैं किन्तु इस उदाहरण में 'पुरारि' का शत्रु इस शब्द के सान्निध्य के कारण देव शब्द 'शिव' का वाचक है।

सामर्थ्य

'मधुना मत्तः कोकिलः' (कोयल वसन्त के कारण मतवाली है) इस वाक्य में 'मधु' शब्द अनेकार्थक है - उसके दैत्य, वसन्त, मद्य आदि अनेक अर्थ होते हैं किन्तु कोयल के मत्त करने की मामर्थ्य केवल वसन्त में है। अतः सामर्थ्य के कारण भी अनेकार्थक शब्दों का नियन्त्रण होता है।

औचित्य

जहाँ औचित्य के कारण अनेकार्थवाची शब्द के एक अर्थ का निर्णय हो। जैसे 'पातु वो दयितामुखम्' (प्रिया का मुख तुम्हारी रक्षा करे) यहाँ प्रयुक्त मुख शब्द अनेकार्थक है (मुंह, प्रारम्भ, सामुख्य) किन्तु यहाँ मुख का अर्थ मुँह या आनन है जो साम्मुख्य या आनुकूल्य अर्थ में प्रयुक्त है।

देश-

जहाँ अनेकार्थवाची शब्द के एक अर्थ का निर्णय देश-काल के आधार पर किया जाता है, जैसे - **"भात्यत्र परमेश्वरः"** (यहाँ परमेश्वर शोभित होते हैं) "इसमें राजधानी रूप देश के कारण (अनेकार्थक) 'परमेश्वर' शब्द 'राजा' अर्थ में नियन्वित होता है।"

काल

जहाँ काल (समय) के आधार पर अनेकार्थक शब्द के एक अर्थ का निर्धारण होता है, जैसे - **चित्रभानुविभाति इतिदिने रवी रात्री वह्नौ** इस उदाहरण में 'चित्रभानु' शब्द अनेकार्थक (सूर्य एवं अग्नि) है। यदि हम इस उदाहरण का प्रयोग दिन में करते हैं तो इसका अर्थ 'सूर्य' होगा और यदि 'रात' में प्रयोग होता है तो 'अग्नि'।

व्यक्ति

जहाँ व्यक्ति का आशय स्त्रीलिंग एवं पुल्लिग से है व्यक्ति के द्वारा भी एक अर्थ का निर्णय होता है। जैसे - **'मित्रं भाति'** (मित्र सुशोभित हो रहे है)। यहाँ मित्र शब्द का अर्थ है सहृद और यही उदाहरण 'मित्रो भाति हो तो सूर्य चमक रहा है क्योंकि नपुंसक लिंग में मित्र शब्द का अर्थ सुहृद एवं पुल्लिग में सूर्य होता है।

स्वर

उदात्तादि स्वरों का भेद वेद में ही अर्थभेद का नियन्त्रण करता है, लौकिक काव्य में नहीं। इसलिए इसका उदाहरण मम्मट ने नहीं दिया है। इस बात को मम्मट ने इन शब्दों में व्यक्त किया है - "इन्द्रशत्रुरित्यादी वेद एव न काव्ये स्वरो विशेष प्रतीतिकृत्।

"आचार्य मम्मट ने इस प्रसंग में लिखा है कि" इस प्रकार संयोग आदि के द्वारा अन्य अर्थ के बोधकत्व का निवारण हो जाने पर भी अनेकार्थ शब्द, जो कहीं दूसरे अर्थ का प्रतिपादन करता है, अभिधा नहीं हो सकती है, क्योंकि उसका नियन्त्रण हो चुका है और मुख्यार्थ बाध आदि के न होने से लक्षणा भी नहीं हो सकती है, अंजन अर्थात् व्यञ्जना व्यापार ही होता है—

"इत्थं संयोगादिभिरर्थन्तराभिधायकत्वे निवारितेऽप्यनेकार्थस्य शब्दस्य यत् क्वचिदर्थान्तरप्रतिपादनम्, तत्र नाभिधा नियमनात् तस्याः। न च लक्षणा मुख्यार्थ बाधाद्यभावात्। अपित्वञ्जनं व्यञ्जनमेव व्यापारः।"

आचार्य मम्मट ने इस बात को इस उदाहरण से स्पष्ट किया है—

भद्रात्मनो दूरधिरोहतनोविशालवंशोन्नतेः कृतशिलीमुख संग्रहस्य।
यस्यानुपप्लुतगतेः परवारणस्य दानाम्बुसेकसुभगः सततं करोऽभूत्॥

इस श्लोक में एक राजा की स्तुति है, इसलिए उसमें जितने अनेकार्थक शब्द हैं, "उन सबका प्रकरण से एक अर्थ में नियन्त्रण हो जाता है। फिर भी उसमें हाथी परक दूसरे अर्थ और उसके साथ उपमानोपमेय भाव की भी प्रतीति होती है। राजा के सारे विशेषण हाथी के पक्ष में भी लगते हैं। वह दूसरी प्रतीति अभिधामूला व्यंजना से ही होती है। इस बात के प्रतिपादन के लिए यह उदाहरण है।"

धन्यवाद